राधे-राधे.....

ज्ञान के आधे-आधे।
बोलते हैं राधे-राधे।।

लेखक
राजेन्द्र मुनि वानप्रस्थ
(फूलपुर-आजमगढ़)

सम्पादक
लाजपतराय अग्रवाल
(वैदिक मिशनरी)

प्रकाशक :

अमर स्वामी प्रकाशन विभाग
१०५८, विवेकानन्द नगर, गाज़ियाबाद (उ०प्र०) भारत
E-mail : lajpatraiaggarwal1058@gmail.com
Website: www.amarswamiprakashan.com

मोबाईल : 09266056715, 09910336715

प्रथम संस्करण, अप्रैल, सन् २०२५ ई० मूल्य : पाँच रुपये

© : अमर स्वामी प्रकाशन विभाग

प्रकाशक : अमर स्वामी प्रकाशन विभाग
१०५८, विवेकानन्द नगर, गाजियाबाद-२०१००१
(उत्तर प्रदेश) भारत
चलभाष : ०९९१०३३६७१५, ०९२६६०५६७१५
शब्द संयोजक : अतुल त्यागी-९९५३२६०९४१
मुद्रक : नूतन ऑफसैट प्रिंटिंग प्रैस, गाजियाबाद (उ०प्र०)
मूल्य : पाँच रुपये
लेखक : राजेन्द्र मुनि वानप्रस्थ, मो० : ८७३७९०९०००
सम्पादक : लाजपत राय अग्रवाल (वैदिक मिशनरी)
चलभाष: ०९९१०३३६७१५, ०९२६६०५६७१५
संस्करण : प्रथम संस्करण अप्रैल, सन् २०२५ ई०
साज-सज्जा : सूरज पाल आर्य, गाजियाबाद।

नोट : भारत भर में हमारे सभी वितरकों के पास उपलब्ध

RADHE-RADHE.....

Writer : Rajendra Muni Vanpratha

Editor : Lajpat Rai Agarwal (Vaidik Missionary)

Amar Swami Prakashan Vibhag

1058, Vivekanand Nagar, Ghaziabad-201001 (U.P.) India

I Edition, April, 2025 ❑ **Price : Rs. 5/-**

प्रस्तुत पुस्तक में.....,

राधे-राधे...जिधर भी देखो उधर ही मथुरा, वृन्दावन में, बस, एक ही लहर है-राधे-राधे....राधे-राधे...इसका रहस्य जानने के लिए प्रस्तुत पुस्तक को पढ़ें।

-लाजपत राय अग्रवाल
(वैदिक मिशनरी)

सम्पादकीय

लाजपत राय अग्रवाल
(वैदिक मिशनरी)

भाइयो,

आज कृष्ण के भक्तों ने कृष्ण को भी पीछे छोड़ दिया है। बल्कि यूँ कहिये कि कृष्ण की तो उनको कोई चिन्ता या परवाह ही नहीं है। क्योंकि उनका मानना है कि जैसे-गाय के बछड़े को आप अगुवा कर लीजिये तो बस गाय तो खुद-व-खुद पीछे आ जायेगी। इसी तरह आप राधा को अपनी भक्ति से खुश कर लो और फिर देखो कि कृष्ण की क्या मजाल? जो पीछे-पीछे आते हुए दिखाई न दें। इसी रहस्य को जानने के लिए प्रस्तुत पुस्तक का अध्ययन करें।

-लाजपत राय अग्रवाल (वैदिक मिशनरी)

राधे-राधे.....

ज्ञान के आधे-आधे।
बोलते हैं राधे-राधे।।

आजकल कुछ लोग हर बात में राधे-राधे बोलते रहते हैं। किसी से मिलने पर भी उसका स्वागत अभिनन्दन, वन्दन या अभिवादन 'राधे-राधे' बोलकर ही करते हैं। वे लोग समझते हैं कि राधे-राधे कहना ईश्वर भक्ति है और राधे-राधे कहने से सारे पाप कट जायेंगे। पापों के कट जाने से मोक्ष भी मिल जाएगा।

ऐसे लोग वेद-शास्त्र आदि ग्रंथों को न पढ़ने सुनने के कारण ही ज्ञान के आधे-आधे रह जाते हैं और राधे-राधे कहते कहते संसार दुःख सागर में गोते खाते रह जाते हैं। शास्त्र विरूद्ध कार्य करने के कारण वे लोग कभी सुख शांति नहीं पाते हैं। उन्हें मोक्ष भी नहीं मिलता। योगेश्वर भगवान श्री कृष्ण जी महाराज ने ऐसे लोगों के लिए ही कहा है-

यः शास्त्र विधिमुत्सृज्य वर्तते काम कारतः।
न स सिद्धिमवाप्नोति न सुखं न परां गतिम्।।

(गीता अध्याय १६ श्लोक २३)

अर्थात्-जो शास्त्र विधि को छोड़कर मनमाना कार्य करता है, वह न सिद्धि को प्राप्त करता है, न सुख को और न मोक्ष को ही प्राप्त करता है।

नाम जप की शास्त्र विधि

किसी शास्त्र में राधे-राधे नाम जपने का कोई विधान नहीं लिखा है। क्योंकि राधे या राधा ईश्वर का नाम नहीं है। ईश्वर का मुख्य नाम ओ३म् है। इसीलिए शास्त्रों में ओ३म् नाम जप करने का ही विधान लिखा हुआ है। महाराज मनु कहते हैं कि-

अर्थ कामेष्वसक्तानां धर्मज्ञानं विधीयते।
धर्मजिज्ञा समानानां प्रमाणं परमं श्रुतिः॥१३२॥

(मनुस्मृति अध्याय १ श्लोक १३२)

अर्थात्-परन्तु जो द्रव्यों के लोभ और काम अर्थात्-विषयों में फंसा हुआ नहीं होता, उसी को धर्म का ज्ञान होता है, जो धर्म को जानने की इच्छा करें, उनके लिए वेद ही परम् प्रमाण है।

वेद में परमात्मा का स्मरण ओम् नाम से ही करने का निर्देश है।

वायुरनिलममृतमथेदं भस्मान्तं ॐ शरीरम्।
ओ३म् क्रतो स्मर! क्लिबे स्मर। कृतं ॐ स्मर॥१५॥

(यजुर्वेद अध्याय ४० मन्त्र १५)

भावार्थ-मनुष्य को चाहिये कि, जैसी मृत्यु समय में चित्त की वृत्ति होती है, और शरीर से आत्मा का पृथक होना होता है, वैसे ही इस समय भी जानें, इस शरीर की जलाने पर्यन्त क्रिया करें, जलने के पश्चात् शरीर का कोई संस्कार ना करें।

वर्तमान समय में एक परमेश्वर की आज्ञा का पालन उपासना और अपने सामर्थ्य को बढ़ाया करें, किया हुआ कर्म, निष्फल नहीं होता, ऐसा मानकर धर्म में रूचि और अधर्म में अप्रीति किया करें, इसलिये हे जीव तू ओ३म् का स्मरण कर।

महर्षि पतञ्जली ने योगदर्शन के समाधिपाद में लिखा है कि-

तस्य वाचकः प्रणवः॥२७॥

अर्थात् उसका बोधक प्रणव 'ओ३म्' है।

तज्जपस्तदर्थ भावनम्॥२८॥

अर्थात् उसका जप और उसके अर्थ की भावना करना। अतः सूत्रार्थ हुआ कि-'ओ३म्' का जप करना।

ओ३म् का अर्थ सर्वव्यापक तथा सर्वरक्षक है। जो ईश्वर को सर्वव्यापक मानकर कहीं भी कोई पाप कर्म नहीं करता है और सबकी रक्षा करता है, वही सच्चा ईश्वरभक्त है।

जो राधे-राधे हैं कहते।
वे कृष्ण भक्त नहीं रहते॥

राधे-राधे कहने वाले कृष्ण भक्त होने का नाटक करते हैं, किन्तु कृष्ण भक्त नहीं रहते। वे लोग सोचते हैं कि राधा, कृष्ण जी की प्रेमिका थी। राधा का नाम लेकर बुलाने पर राधा खुद ही चली आएगी और उनके दीवाने कृष्ण जी भी उसके पीछे-पीछे भागते हुए चले आयेंगे। इसलिए वे लोग कहते हैं कि-

राधे-राधे जपो...चले आयेंगे बिहारी।
चले आयेंगे बिहारी, चले आयेंगे बिहारी॥

राधे-राधे.....

उन भोले लोगों को इतना भी ज्ञान नहीं है कि कृष्ण जी की पत्नी रूक्मणी थी। पत्नी के रहते हुए किसी

अन्य प्रेमिका का दीवाना होना किसी देवता की पहचान नहीं है। कृष्ण जी देवता थे, वह योगेश्वर थे, उनकी कोई प्रेमिका नहीं थी। वह सदाचारी थे। कृष्ण जी की कोई पत्नी या प्रेमिका 'राधा' नाम की थी? ऐसा पूरे महाभारत ग्रंथ में कहीं नहीं लिखा है।

मूल भागवत पुराण में भी कहीं राधा नाम नहीं आया है। गीता प्रेस वालों ने भागवत माहात्म्य नाम से भागवत पुराण के अन्त में एक परिशिष्ट बढ़ाया है, उसमें राधा नाम तो आया है, लेकिन राधे-राधे जपने के लिए नहीं लिखा है।

योगेश्वर श्री कृष्ण जी के चरित्र को जानने के लिए महाभारत ग्रन्थ ही प्रमाण है। भागवत पुराण मान्य ग्रन्थ नहीं है। यह पुराण अर्थात् पुराना ग्रन्थ भी नहीं है। देखिये-भागवत पुराण में स्कन्ध १२ अध्याय १ श्लोक १२-१३ में चाणक्य तथा चंद्रगुप्त मौर्य का भी नाम आया है और स्कन्ध २ अध्याय १ श्लोक ३० में यवन और तुर्कों के राज्य का भी उल्लेख मौजूद है।

इससे सिद्ध है कि भागवत पुराण भारत में मुसलमानों का राज हो जाने के बाद लिखा गया है। योगेश्वर भगवान

श्री कृष्ण जी महाराज ने गीता अध्याय ८ श्लोक १३ में स्वयं ओ३म् नाम जप करने का ही उपदेश दिया है, देखिये-

ओमित्येकाक्षरं ब्रह्म व्याहरन्मामनुस्मरन्।
यः प्रयाति त्यजन्देहं सं याति परमां गतिम्॥१३॥

भावार्थ-'ओ३म्' इस एक अक्षर ब्रह्म को जपता हुआ और साथ ही मेरा (परमेश्वर का) ध्यान करता हुआ जो जीव देह छोड़ता है, वह उस परम् पद (मोक्ष) को प्राप्त होता है।

भाइयो गीता के इस उपदेश को न मानकर ये राधे के अन्धभक्त जो राधे-राधे जपते हैं तो वे तो खुद ही श्री कृष्ण के उपदेश का उल्लंघन करते हैं। तब वे कृष्ण भक्त कैसे हुए? ऐसे लोग तो भक्त नहीं अपितु कृष्ण जी के शत्रु हैं। क्योंकि वे उनकी बात भी नहीं मानते और राधा नाम की प्रेमिका से उनका सम्बन्ध जोड़कर उन्हें बदनाम भी करते हैं।

अभिवादन का शब्द नहीं है 'राधे'

राधे-राधे बोलकर किसी का अभिवादन करना

अथवा किसी के प्रणाम करने पर राधे-राधे बोलकर आशीर्वाद देना पूरी मूर्खता है। कोई पुरुष अपने किसी मित्र से राधे-राधे कहता है तो इसका अर्थ यह हुआ कि-तुम भी राधे हो और मैं भी राधे हूँ। सच बात तो यह है कि दोनों में से कोई भी राधे नहीं है।

इस प्रकार झूठ बोलना कभी भी धर्म नहीं हो सकता। ऐसा कहना मूर्खता है और अधर्म भी है। पाखण्डी महिलाएँ भी किसी से मिलती हैं तो राधे-राधे ही बोलते हैं। कोई महिला जब किसी दूसरी महिला से मिलती है और राधे-राधे बोलती है तब उसके उत्तर में दूसरी महिला भी राधे-राधे ही बोलती है।

एक कहती है कि तुम राधे-राधे अर्थात् कृष्ण जी की प्रेमिका हो तो दूसरी भी राधे-राधे कहती है, अर्थात् तू राधे-राधे है, तो मैं भी राधे-राधे ही हूँ। इस प्रकार दोनों श्री कृष्ण जी की प्रेमिका होना स्वीकार करती हैं।

राधे-राधे कहने वाले लोग भी श्री कृष्ण जी के साथ राधा का जो सम्बन्ध बताया जाता है उसे अच्छा नहीं मानते हैं। इसीलिए अपनी दादी, मां, बहन, बेटी आदि से मिलने पर यह लोग भी राधे-राधे नहीं बोलते हैं। कोई माँ

अपने बेटे-बेटी को राधे-राधे का आशीर्वाद नहीं देता है क्योंकि यह आशीर्वाद सूचक शब्द है ही नहीं।

अभिवादन का सर्वोत्तम शब्द

नमस्ते!

भाइयो, अभिवादन के लिए सदा नमस्ते शब्द का ही प्रयोग करना चाहिए। वेदों में परमात्मा के लिए नमस्ते शब्द का ही प्रयोग हुआ है। देखिये यजुर्वेद में आया है कि-

नमस्ते अस्तु विद्युते नमस्तें स्तनयित्नवे।
नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्वः समीहसे॥२१॥

(यजुर्वेद अध्याय ३६ मन्त्र २१)

अर्थात्-हे सुख प्रदाता भगवन् आपके लिए नमस्ते हो.....

श्री कृष्ण जी महाराज स्वयं नमस्ते कहकर अभिवादन करते थे। महाभारत में देखिये, उन्होंने स्वयं धृतराष्ट्र से नमस्ते कहकर अभिवादन किया था। आप पूरे महाभारत को देख लीजिये जिसमें परस्पर मिलने पर सर्वत्र नमस्ते का ही प्रयोग हुआ है-राधे-राधे का कहीं भी नही हुआ।

आर्य समाज कोलकाता के पुरोहित श्री पण्डित अयोध्या प्रसाद वैदिक मिशनरी सन् १९३३ ई० में सेंट श्री युगलकिशोर बिरला की आर्थिक सहायता से अमेरिका के शिकागो नगर में आयोजित विश्व धर्म सम्मेलन में वैदिक धर्म के प्रतिनिधि बनकर गये थे।

उन्होंने सम्पूर्ण विश्व के मनुष्य के लिए अभिवादन का एक ही शब्द नमस्ते सिद्ध किया और उसकी प्रभावशाली व्याख्या की। परिणाम स्वरूप नमस्ते शब्द को विश्व का अभिवादन शब्द स्वीकार किया।

अतः राधे-राधे कहकर अभिवादन करना किसी भी प्रकार से उचित नहीं कहा जा सकता। मानव मात्र के लिए एक ही अभिवादन का शब्द नमस्ते सर्वश्रेष्ठ और सर्वोत्तम अभिवादन है।

ये कलियुग की राधाएँ।
बनी देशोन्नति में बाधाएँ॥

भारत में शिक्षा का प्रचार-प्रसार होने के बाद भी सच्ची धार्मिक शिक्षा न होने के कारण कुछ महिलाएँ और पुरूष भी स्वयं को राधा होने का नाटक करते हैं। वे अपने को कृष्ण की दीवानी राधा कहते हैं।

सन् १९७१ ई० बैच का एक आई०पी०एस० अधिकारी देवेन्द्र किशोर पांडा (डी० के० पांडा) ने अपने लखनऊ स्थित आवास पर 'दूसरी राधा' की नेम प्लेट लगवाकर वह राधा का स्वांग बनाकर डांस करता था और खुद को कृष्ण भक्त कहता था। वह पाखंडी मांग में सिन्दूर, माथे पर बड़ी बिन्दी, हाथों में मेंहदी लगाकर, ढेर सी रंग-बिरंगी चूडियां, कानों में बालियां, नाक में नथनी, पीला कुर्ता, सलवार तथा पैरों में घुंघरू पहनकर सन् २००५ में जब सार्वजनिक रूप से पागलों की तरह नाचने लगा तब बहुत विरोध होने के कारण उसे अपने पद से त्याग पत्र देना पड़ा।

उसकी पत्नी वीणा पांडे ने सन् २००९ में उस पर गुजारा भत्ता पाने के लिए मुकदमा कर दिया। कोर्ट ने आदेश दिया कि वह अपनी पत्नी को संपत्ति में हिस्सा तथा गुजारा भत्ता दे। वह अपनी पत्नी को १०००० रुपये प्रतिमाह गुजारा भत्ता भी देने लगा लेकिन उसका गृहस्थ जीवन बिल्कुल ही विखंडित हो गया।

सन् २००७ ई० से पहले सन् २००५ ई० में ही उन्होंने रिटायरमेंट ले लिया था। बाद में वह राधा का रूप

छोड़कर स्वयं को कृष्ण का अवतार बताने लगे हैं और उन्होंने अपना नाम कृष्णानंद रख लिया है। वह मूल रूप से उड़ीसा के रहने वाले हैं किन्तु अब प्रयागराज में रहते हैं।

जब खजाना लुट गया तब होश में आए तो क्या?।
मलमल के दस्ते हसरत, बाद पछताए तो क्या?॥

४ अप्रैल सन् १९६५ ई० को पंजाब के गुरदासपुर जिले में दोरंगला गांव में जन्मी महिला सुखविंदर कौर का विवाह सरदार मोहन सिंह से हुआ। वह अपने को कृष्ण की प्रेमिका राधे मां कहती है। सिक्ख परिवार की यह महिला केवल कक्षा चार तक पढ़ी है। इसलिए ना यह कोई प्रवचन देती है और ना ही कुछ उपदेश ही करती है। यह अपने को दुर्गा मां का भी अवतार कहती है। हाथ में त्रिशूल, लाल गुलाब लेकर, लाल लिपस्टिक और लाल टीका लगाकर, लाल कपड़ों में सजी हुई राधे मां अपने भक्तों को बड़े प्यार से दर्शन देती है।

अपने भक्तों को 'आई लव यू' कहती है और उन्हें लाल गुलाब का फूल देती है। यह मुम्बई के एक बिजनेसमैन संजीव गुप्ता के घर पर रहती है। उस घर को राधे मां भवन

कहा जाता है। संजीव गुप्ता की बहू ने राधे मां पर आरोप लगाया है कि वह उनके सास-ससुर को दहेज मांगने के लिए प्रेरित करती है।

पहले राधे मां की भक्त रह चुकी एक एक्ट्रेस डॉली बिन्द्रा ने सन् २०१५ ई० में राधे मां पर अश्लील आचरण करने का खुलासा किया था। राधे मां भक्तों के साथ डांस करती है तथा अपने प्यारे भक्तों की गोद में बैठकर उन्हें आशीर्वाद और आनन्द प्रदान करती है।

इस प्रकार बहुत सी राधाएं आज देश की उन्नति में बाधायें बन रही हैं। ऐसी कलयुगी राधाओं का उद्देश्य स्वयं भोग विलास करना तथा देश के युवक युवतियों को गलत रास्ते पर ले जाना होता है। श्याम के सच्चे भक्तों से निवेदन है कि राधे-राधे बोलकर योगिराज श्री कृष्ण भगवान के चरित्र को बदनाम न करें। स्वयं अपने को ही श्याम का, राम का या भगवान का अवतार बताने वाले इन धूर्त पाखंडियों से भी सतर्क और सावधान रहें।

प्रातः सायं मन मंदिर में, सदा ओ३म् ही जपते रहना।
मिलो प्रेम से अगर किसी से, सदा नमस्ते ही कहना॥

॥समाप्त॥